कहानीकार रांगेय राघव
और
प्रगतिशील हिंदी कहानी

अजय ब्रह्मात्मज



कहानीकार रांगेय राघव

और

प्रगतिशील हिंदी कहानी



अजय ब्रह्मात्मज

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: अक्टूबर, 2026

© अजय ब्रह्मात्मज

अनुक्रम

प्राक्कथन	3
प्रगतिशील हिंदी कहानी की पृष्ठभूमि और परंपरा	7
प्रगतिशील हिन्दी कहानी का परिदृश्य	46
रांगेय राघव की कहानियां : शिल्प की सहजता और विस्तार	119
उपसंहार	138
परिशिष्ट	147
संदर्भ ग्रंथ सूची	155

प्राक्कथन

हिंदी कहानी में प्रगतिशील चेतना आरंभ से ही वर्तमान रही है। इस शताब्दी के आरंभिक दो दशकों में हिंदी कहानी ने विधागत आकार लिया और स्वतंत्र विधा के रूप में अपनी पहचान बनायी। आरंभिक कहानीकारों के सार्थक प्रयास से हिंदी कहानी का अनेकरूपता के साथ विकास हुआ। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इसकी अनेकरूपता के आधार पर स्वतंत्र सिद्धांत स्थिर करने की मंशा प्रकट की थी। रामचंद्र शुक्ल ने इस दिशा में प्रयास भी किया। किंतु उनके बाद अन्य आलोचकों और इतिहासकारों ने 'कहानी' पर विशेष ध्यान नहीं दिया। केंद्रीय विधा के रूप कविता स्वीकृत थी, फलतः कहानी अपनी समस्त ऊर्जा और सामाजिकता के बावजूद आलोचना के केंद्र में नहीं जा सकी।

1936 के पूर्व की हिंदी कहानी का ही स्वाभाविक विकास प्रगतिशील कहानी के रूप में होता है। प्रस्तुत अध्ययन में प्रगतिशील कहानी के परिप्रेक्ष्य में रांगेय राघव की कहानियों के मूल्यांकन का प्रयास किया गया है। रांगेय राघव प्रगतिशील हिंदी कहानी के महत्वपूर्ण कहानीकार हैं। यशपाल, राहुल सांकृत्यायन और अमृत राय के साथ रांगेय राघव के नाम की चर्चा तो मिलती है पर उनके विशिष्ट योगदान के प्रति उदासीनता रही है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के चार अध्याय हैं। पहले अध्याय में हिंदी कहानी के विकास का आकलन है। 1936 के पूर्व की हिंदी कहानी ही प्रगतिशील हिंदी कहानी के उद्भव का आधार है। अतः इसे प्रगतिशील हिंदी कहानी की पृष्ठभूमि और परंपरा के रूप में रेखांकित किया गया है।

प्रेमचंद इस युग के प्रमुख कहानीकार हैं। उनकी कहानियों के माध्यम से उत्तर भारत का संपूर्ण व्यक्तित्व अपनी परिवर्तनशील मानसिकता के साथ उपस्थित हुआ है। यह युग हिंदी कहानी के विकास का युग है। प्रेमचंद और प्रसाद के परस्पर पूरक योगदान से हिंदी कहानी समृद्ध होती है। प्रेमचंद की दृष्टि संपन्नता और सामाजिकता अन्य कहानीकारों के अपेक्षा तीव्र और वस्तुनिष्ठ है। प्रेमचंद इस युग के अग्रणी कथाकार हैं। प्रेमचंद के अतिरिक्त अन्य कहानीकारों ने भी कहानी साहित्य के वैधानिक स्वरूप को विकसित करने में मदद की है। कौशिक, उग्र, निराला की कहानियाँ इस युग की कहानी को अनेकरूपता प्रदान करती हैं। 1936 के बाद हिंदी कहानी में दो समानान्तर प्रवृत्तियाँ लक्षित होती हैं, वैसी स्थिति इस युग में नहीं है। समाज के जनतांत्रिकरण में कहानीकारों का योगदान है। इसी परिप्रेक्ष्य में पहले अध्याय में प्रेमचंद और प्रसाद तथा अन्य महत्वपूर्ण कहानीकारों के सामूहिक एवं पूरक प्रयासों का अध्ययन है। 1936 के पूर्व की हिंदी कहानी मुख्य तौर पर समाज के जनतांत्रिकरण और स्वतंत्रता को केंद्र में रखकर लिखी गई है। विभिन्न कहानीकारों ने इसी केंद्रीय भावना की अभिव्यक्ति विभिन्न कहानी रूपों से की है।

दूसरे अध्याय का शीर्षक है प्रगतिशील हिंदी कहानी का परिदृश्य। इस अध्याय में पहले प्रगतिशील हिंदी कहानी की काल सीमा निर्धारित की गई है। तत्पश्चात प्रमुख कहानीकारों यशपाल, राहुल सांकृत्यायन, अमृत राय, भगवत शरण उपाध्याय, अश्क, भैरव प्रसाद गुप्त की कहानियों के आलोक में उनके विश्लेषण और मूल्यांकन का प्रयास किया

गया है। अध्याय के अंत में प्रगतिशील हिंदी कहानी के सामान्य विशेषताओं को रेखांकित किया गया है।

तीसरे अध्याय में 'रांगेय राघव की कहानियाँ : कथ्य और यथार्थ' शीर्षक के अंतर्गत रांगेय राघव की कहानियों का विश्लेषण है। इन कहानियों की विषयवस्तु, कार्यरत दृष्टिकोण और अभिव्यक्त यथार्थ का विश्लेषण है। रांगेय राघव की कहानियाँ कालक्रमानुसार उपलब्ध नहीं हैं। अतः अध्ययन की सुविधा के लिए कहानियों के विषयवस्तु के आधार पर उन्हें विभिन्न शीर्षकों में बाँटा गया है। शेष बची हुई महत्वपूर्ण कहानियों की चर्चा 'अन्य कहानियों' के अंतर्गत की गई है। अध्ययन का उद्देश्य रांगेय राघव को उनकी कहानियों के माध्यम से समझने का रहा है। रांगेय राघव के कहानीकार व्यक्तित्व की विशेषताओं का प्रगतिशील हिंदी कहानी के सामान्य प्रवृत्तियों के परिप्रेक्ष्य में दिखाया गया है।

अंतिम अध्याय में रांगेय राघव की कहानियों के शिल्प की पड़ताल की गई है। इसी पड़ताल के क्रम में कहानियों की रचना प्रक्रिया पर भी प्रसंगवश टिप्पणी की गई है। कुछ चर्चित कहानियों के संदर्भ में रांगेय राघव के विचारों को भी ध्यान में रखा गया है। रांगेय राघव के शिल्प की सहजता और कहानी के रूपात्मक विस्तार का अध्ययन ही इस अध्याय का उद्देश्य रहा है। प्रस्तुत शोध प्रबंध के निर्माण एवं मार्गदर्शन के प्रक्रिया में आशीष एवं स्नेह बनाए रखकर डॉ. (श्रीमती) सावित्री चंद्र 'शोभा' ने संपन्न कराया है। मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूँ। मुझे अध्ययन के क्रम में उचित निर्देशन पाने का सुयोग मिला है। डॉ. मैनेजर पांडे के प्रति भी कृतज्ञ हूँ। समय-समय पर उनके सुझावों से सुविधा मिली है।

रांगेय राघव की कहानियों पर यह कार्य संपन्न ही नहीं होता, यदि डॉ. (श्रीमती) सुलोचना रांगेय राघव का स्नेह नहीं मिलता। जयपुर बुलाकर उन्होंने न सिर्फ कहानियाँ दीं, बल्कि अध्ययन की सुविधा भी प्रदान की। वहीं पर सीमन्तिनी और श्री अशोक शास्त्री के साथ हुई सार्थक बातचीत से भी मदद मिली है। मैं श्री रांगेय राघव के व्यक्तित्व, व्यक्तिगत जीवन और आदतों से परिचित हुआ। उनकी कहानियों को समझने में इससे सहायता मिली है। सीमन्तिनी और श्री अशोक शास्त्री के सहयोग का आभारी हूँ। जयपुर में ही श्री रवि श्रीवास्तव और विजया कौशिक से मिले सहयोग का आभार व्यक्त कर मैं मुक्त नहीं हो सकता।

लघु शोध प्रबंध के लिखे जाने में हिंदी साहित्य सम्मेलन - इलाहाबाद, काशी हिंदू विश्वविद्यालय - बनारस, बिहार राष्ट्रीय भाषा परिषद - पटना, मारवाड़ी पुस्तकालय - दिल्ली के पुस्तकालयों को भी नहीं भुलाया जा सकता। मैं इन पुस्तकालयों के कर्मचारी बंधुओं का आभारी हूँ। इनकी मदद से ही अनुपलब्ध पुस्तकें और पत्रिकाएँ मिलीं।

अपने साथ के तमाम मित्रों विशेषकर राजीव, उदय, खुर्शीद, ब्रजमोहन, परवीन, संध्या और विभा का आभार व्यक्त करता हूँ। इनके सहयोग-असहयोग, प्रेम-द्वेष के कारण यह शोध संपन्न हुआ और अंत में साथी बरमेश्वर को धन्यवाद देना चाहूँगा, जिन्होंने पूरी सुरुचि और लगन के साथ टंकन कार्य पूरा किया। उनके सद्भाव ने मुझे बहुत सारी आवश्यक चिंताओं से मुक्त रखा।

अजय ब्रह्मात्मज